प्राकृतिक खेती पर क्षेत्र दिवस-सह-जागरूकता अभियान आयोजित

4 जनवरी 2024, बारुईपुर

भाकृअनुप- कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, कोलकाता के अधिकार क्षेत्र के तहत सस्य श्यामला कृषि विज्ञान केंद्र (एसएसकेवीके), रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द शैक्षिक एवं अनुसंधान संस्थान द्वारा आज पश्चिम बंगाल के दक्षिण 24 परगना जिले के बारुईपुर ब्लॉक के गांव मऊतला में भारत सरकार का प्रमुख कार्यक्रम प्राकृतिक खेती पर एक क्षेत्र दिवस-सह-जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया।

मुख्य अतिथि डॉ. प्रदीप डे, निदेशक, अटारी, कोलकाता ने अपने संबोधन में कहा कि प्राकृतिक खेती पारिस्थितिक रूप से समन्वयित खेती है जो पर्यावरणीय प्रबंधन को बढ़ावा देती है, सुरक्षित और पौष्टिक भोजन का उत्पादन सुनिश्चित करती है, जैव विविधता का संरक्षण करती है और लंबे समय तक योगदान देती है। उन्होंने प्राकृतिक खेती के चार स्तंभों की व्याख्या की और कहा कि किसानों को विशेष रूप से लंबे समय में आर्थिक लाभ प्रदान करने वाली सिंथेटिक इनपुट और महंगी प्रौद्योगिकियों पर निर्भरता को कम करना संभव है। डॉ. डे ने एसएसकेवीके की उपलब्धियों और जिले के लगभग हर कोने में प्राकृतिक कृषि पद्धतियों को आगे बढ़ाने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका की सराहना की।

डॉ. अथोई गुप्ता, एडीए, पश्चिम बंगाल सरकार कहा कि एसएसकेवीके के साथ व्यापक सहयोग के लिए कृषि विभाग प्रतिबद्ध है। उन्होंने उचित पोषण और बीमारी की रोकथाम के लिए प्राकृतिक खेती के महत्व के बारे में भी बताया।

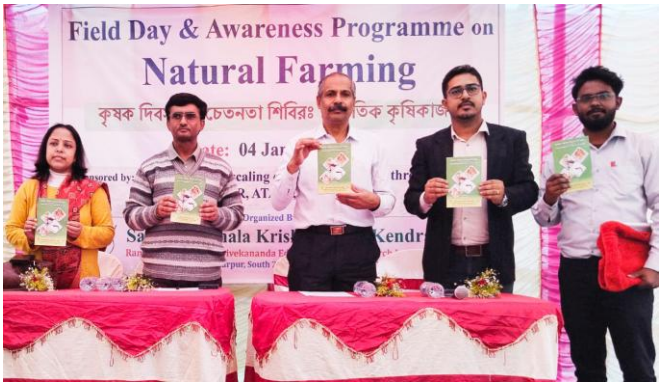

एसएसकेवीके के प्रमुख डॉ. एन.सी. साहू ने अपने भाषण में बताया कि प्राकृतिक खेती सिंथेटिक रसायनों, कीटनाशकों और उर्वरकों के उपयोग को कम करती है, जिससे मिट्टी, पानी और वायु प्रदूषण कम होता है। उन्होंने कहा कि टिकाऊ कृषि के लिए स्वस्थ मिट्टी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह पानी को बरकरार रखती है, पोषक तत्वों की उपलब्धता में सुधार करती है और कार्बन उत्सर्जन कम करती है, जिससे जलवायु परिवर्तन कम होता है।

एसएसकेवीके के विषय वस्तु विशेषज्ञ (पौधा संरक्षण) डॉ. ए. घोषाल ने प्राकृतिक खेती के लिए बीजामृत, जीवामृत, नीमास्त्र, ब्रह्मास्त्र, अग्निस्त्र की तैयारी और अनुप्रयोग के बारे में विस्तार से बताया। प्रश्नोत्तर सत्र के दौरान किसानों के प्रश्नों का भी समाधान किया गया।

प्राकृतिक खेती की विभिन्न सामग्री तैयार करने का व्यावहारिक प्रदर्शन कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रहा। प्रकाशनों का विमोचन करने के पश्चात किसानों के बीच वितरित किया गया। गांव में प्राकृतिक खेती के प्रदर्शन स्थल का दौरा भी आयोजित किया गया।

प्रगतिशील किसानों ने प्राकृतिक खेती के बारे में अपने अनुभव भी साझा किये। कार्यक्रम में 150 से अधिक किसानों ने भाग लिया।